राजनीतिक व्यवस्था में महिला सहभागिता

[1]डॉ. शैलेन्द्र मौर्य

शोध सारांश

महिला वर्ग की अपेक्षित स्थिति के सन्दर्भ में उनका राजनीतिक सशक्तिकरण वेश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त उपाय के रूप में स्वीकार किया गया है। अतः भारत में भी महिला सशक्तिकरण की दिशा में व्यापक प्रयास किये जाते रहे है। जिसके परिणामस्वरूप महिला वर्ग की स्थिति में कुछ बदलाव द्रष्टिगत होता है लेकिन उनकी स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं आया है। सार्वजनिक-राजनीतिक क्षेत्र में आज भी महिला वर्ग की सहभागिता उपेक्षित है। संभवतः इसलिए महिला-सशक्तिकरण के सन्दर्भ में महिला राजनीतिक सहभागिता वर्तमान समय की प्रबल आवश्यकता है। नीति एवं निर्णय-निर्माण के प्रत्येक स्तर पर महिलाओं की समान सहभागिता ही उनका राजनीतिक सशक्तिकरण है। नारीवादी व्याख्या के अनुसार महिला सशक्तिकरण एक ऐसी वैकल्पिक समतामूलक संरचना का पक्षधर है, जिसमें स्त्री सशक्त अभिकर्ता के रूप में समाज में शक्ति संरचनाओं के सभी स्तरों पर निर्णय प्रक्रिया में समान सहभागी के रूप में हो।

मूल शब्द : लोकतान्त्रिक व्यवस्था, जन-सहभागिता, राजनीतिक सहभागिता, महिला सहभागिता, महिला सशक्तिकरण

---

[1]*सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय सिरोही, राजस्थान* email: drshailendar78@gmail.com

प्रस्तावना

जन-सहभागिता लोकतान्त्रिक व्यवस्था का मूल आधार है। जन सहभागिता के बिना लोकतान्त्रिक व्यवस्था अपूर्ण है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था शासन - प्रशासन में जनता की सहभागिता की एक व्यवस्था है। राजनीतिक सहभागिता प्रजातांत्रिक व्यवस्था के लिए अनिवार्य शर्त है। लोक अर्थात् जन सामान्य की राजनीतिक सहभागिता के बिना लोकतांत्रिक व्यवस्था का संचालन असंभव है। भारत जैसे विस्तृत एवं विविधतापूर्ण राष्ट्र में लोकतान्त्रिक व्यवस्था के प्रत्यक्ष स्वरूप को लागू करना संभव नहीं है। अतः अप्रत्यक्ष लोकतान्त्रिक व्यवस्था को अपनाया गया है। अप्रत्यक्ष लोकतान्त्रिक व्यवस्था में चुनाव/निर्वाचन ही राजनीतिक सहभागिता को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

राजनीति में महिलाओं की सहभागिता के प्रश्न ने बीसवीं सदी में सबका ध्यान आकृष्ट किया और यह विश्व स्तर पर अध्ययन-अनुसंधान का प्रमुख विषय बन गया है। भारतीय राजनीति के संदर्भ में महिला सहभागिता कोई नवीन अध्याय नही है।[1] वर्तमान में राजनीति विज्ञान और महिला अध्ययन/जेण्डर स्टडी के विद्यार्थियों और अध्येताओं के लिए 'महिला राजनीतिक सहभागिता' अध्ययन-अनुसंधान का प्रमुख क्षेत्र/विषय बन गया है। महिला सशक्तिकरण की द्रष्टि से राजस्थान राज्य की गणना अल्प-विकसित राज्यों में की जाती है। मानव विकास सूची (HDI) के अनुसार राजस्थान को समस्त राज्यों में 17 वां स्थान प्राप्त है। जेण्डर रिलेटेड डवलपमेन्ट इन्डेक्स (GDI) के अनुसार राजस्थान को देश के 35 राज्यों की सूची में 31 वां स्थान प्राप्त है।[2] मानव विकास सूची-2017 (HDI) के अनुसार भारत के समस्त राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों की सूची में राजस्थान को 29 वां स्थान प्राप्त है।[3]

अतः महिला सशक्तिकरण प्रदेश या राष्ट्रीय ही नही वरन् एक महत्वपूर्ण वेश्विक आवश्यकता है। महिलाओं पर चौथा विश्व सम्मेलन-1995 में 4 से 15 सितंबर 1995 तक बीऋजग में बैठक के बाद बीजिंग **डिकलरेशन एण्ड प्लेटफॉम फॉर एक्शन** के अनुसार महिला सशक्तिकरण और समाज के सभी क्षेत्रों में समानता के आधार पर उनकी पूर्ण भागीदारी, निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी और सत्ता तक पहुंच सहित, समानता, विकास और शांति की उपलब्धि के लिए राज्यों की प्रतिबद्धता का आवह्यान किया गया। बीऋजग डिक्लेरेशन एंड प्लेटफ,र्म फ,र एक्शन महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक दूरदशॅए एजेंडा है। यह

दुनिया भर में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने और महिला सशक्तिकरण के समर्थन में राज्यों के प्रयासों का आकलन करने के लिए संदर्भ एक संरचनसत्मक व्यवस्था है। इसीप्रकार राज्य-राष्ट्रीय स्तर पर भी महिला सशक्तिकरण के विविध प्रयास जारी है। राजनीतिक व्यवस्था में महिला सहभागिता के अध्ययन से पूर्व राजनीतिक सहभागिता को समझना आवश्यक है।

राजनीति सहभागिता का अभिप्राय

राजनीतिक सहभागिता का व्यापक अभिप्राय है। यह मात्र मतदान के अधिकार तक ही सीमित नही अपितु यह निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में सहभागिता, राजनीतिक क्रियाशीलता, राजनीतिक चेतना-समझ तक विस्तृत है।[4] सहभागिता प्रत्येक समाज एवं राजनीतिक व्यवस्था के मूल्यांकन करने का आनुभाविक साधन है। व्यक्ति की राजनीतिक क्रिया व्यक्ति को राजनीति में सहभागी बना देती है। इस स्थिति को ही विद्वानों ने राजनीतिक सहभागिता की संज्ञा दी है। राजनीतिक क्रिया की सचेतनता एवं उदेद्श्यपूर्णता राजनीतिक निर्णयकारिता से प्रभावित होती है। निर्वाचनों में मतदान करना राजनीतिक क्रिया है क्योंकि इसमें राजनीतिक व्यवस्था की निर्णयकारिता प्रभावित होती है। अतः मतदान की प्रक्रिया राजनीतिक सहभागिता के साथ-साथ जन सहभागिता भी है। जन सहभागिता को अधिकांश विद्वानों ने राजनीतिक सहभागिता की दृष्टि से देखने का प्रयास किया है।

राजनीतिक सहभागिता से अभिप्राय उन स्वैच्छिक क्रियाओं से है, जिनके द्वारा किसी समाज के सदस्य शासकों के चयन एवं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जन-नीतियों के निर्माण में भाग लेते हैं। नीई तथा वर्बा के अनुसार राजनीतिक सहभागिता सामान्य व्यक्तियों की वे विधि सम्मत गतिविधियाँ हैं, जिनका उद्देश्य राजनीतिक पदाधिकारियों के चयन तथा उनके द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करना होता है। पाई के अनुसार राजनीतिक सहभागिता नागरिकों के वे कार्य अथवा गतिविधियां हैं जिनसे राजनीतिक व्यवस्था की निर्णयकारी प्रक्रिया प्रभावित एवं निरूपित होती है। अन्य शब्दों में राजनीतिक सहभागिता व्यक्ति की ऐसी राजनीतिक क्रिया है, जिसमें राजनीतिक सत्ता पर कारको का चयन व उनकी निर्णय प्रक्रिया प्रभावित होती है।[5]

राजनीति के साथ आवेष्टन के अन्तर्गत व्यक्ति द्वारा जो राजनैतिक व्यवहार या क्रिया की जाती है, वह राजनीतिक सहभागिता होती है। यह व्यक्ति का सचेतन निर्णय होता है और यह क्रिया उद्देश्यपूर्ण होती है। राजनैतिक गतिविधि में व्यक्ति प्रमुख होता है,[6] क्योंकि व्यक्ति का राजनीतिक व्यवहार ही राजनीतिक संस्थाओं के विकास को निर्धारित करता है। व्यक्ति की राजनीतिक क्रियाशीलता लोकतांत्रिक संस्थाओं को पोषित करती है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक सहभागिता का और भी महत्व इस कारण होता है, क्योंकि अधिकांश राजनैतिक संस्थाओं के निर्माण एवं संचालन का कार्य नागरिकों द्वारा किया जाता है। नागरिक राजनैतिक पदधारकों का चयन करते हैं और राजनैतिक पदों को धारण कर निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

राजनीति में महिला सहभागिता

भारतीय संविधान स्थानीय संस्थाओं से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक की संस्थाओं में नागरिकों की सहभागिता के प्रचुर अवसर प्रदान करता है। यद्यपि भारतीय महिलाओं को नागरिक के रूप में संवैधानिक आधार पर ये अवसर प्रारम्भ से ही प्राप्त है, किन्तु राजनैतिक निर्णयकारिता में महिलाओं की सहभागिता स्वतंत्रता के 70 दशक के बाद भी उल्लेखनीय रूप से नहीं हो पाई है।[7] भारतीय समाज के राजनीतिक पटल पर महिलाएं आज भी उपेक्षित समाज का एक बड़ा हिस्सा है। राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा अर्थात लोकसभा में महिला नेतृत्व मात्र 14.31 प्रतिशत (78) तथा राजस्थान प्रदेश विधानसभा में महिला नेतृत्व मात्र 13 प्रतिशत (26) है।[8] जो राजनीति में महिला सहभागिता की उपेक्षित स्थिति को इंगित करता है। राजनीति में महिला सहभागिता की उपेक्षित स्थिति कोई स्थानीय समस्या नही है अपितु एक वेश्विक समस्या है। अतः राजनीति में महिला सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रयास किये जाते रहे है। चतुर्थ बीजिंग महिला सम्मेलन में निर्णय-निर्माण प्रकिया में महिला नेतृत्व को 30 प्रतिशत तक बढाने के लिए प्रभावी कार्यवाही/योजना, जन संवाद और महिला प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण का मार्ग सुझाया गया। भारतीय राजनीतिक पटल पर महिला प्रतिनिधित्व का औसत 7.88 प्रतिशत है, जो विश्व स्तर पर राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व औसत ;22 प्रतिशतद्ध से बहुत कम है।

दुनिया के सबसे बडे लोकतान्त्रिक देश भारत में वर्तमान में आधी आबादी की संसद में सहभागिता मात्र 14.31 प्रतिशत है, जो 15 वीं लोक सभा में 11 प्रतिशत रही। अब तक सम्पन्न 17 आम चुनाव के परिणामों के अनुसार देश चलाने वाली सर्वोच्च पंचायत में महिला सांसदों की संख्या को हम दहाई की दहलीज से आगे नहीं बढा सके हैं। संसद में महिला सहभागिता /प्रतिनिधित्व की द्वष्टि से भारत की गणना दुनिया के श्रेष्ठ 100 देशों में भी नही की जाती है। इंटरनेशनल पार्लियामेंटी यूनियन

के आंकडे बताते हैं कि दुनिया में 21.8 प्रतिशत महिला सांसद हैं। इसके अनुसार भारत 111 वें पायदान पर खडा है। अफ्रीका महाद्वीप के अनेक देश महिला प्रतिनिधित्व की द्वष्टि से भारत से श्रेष्ठ स्थिति में है।[9]

वर्तमान लोकसभा में महिला सहभागिता/प्रतिनिधित्व भारतीय लोकतान्त्रिक इतिहास में महिला सहभागिता का सर्वोत्तम स्तर है। वर्तमान में भारतीय संसद के लोकप्रिय सदन लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या 78 है। संसद में महिलाओं की संख्या वर्तमान 17 वीं लोकसभा में अब तक सबसे अधिक है लेकिन महिला उम्मीदवारों के चुनाव में सफलता की द्वष्टि से परिणाम उत्साहजनक नहीं हैं। 2019 के लोक सभा आम चुनावों में 724 महिला उम्मीदवारों में से मात्र 10.77 प्रतिशत ;78द्ध महिला उम्मीदवार सफलता प्राप्त कर सकी।[10] संसद में महिला सहभागिता /प्रतिनिधित्व के निम्न प्रर्दशन की यह स्थिति तब है, जब देश के प्रमुख सर्वोच्च राजनीतिक पदों पर महिलाएं कुशल नेतृत्व प्रदान कर चुकी है। देश के प्रमुख सर्वोच्च संवैधानिक पद राष्ट्रपति पर श्रीमति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, प्रधानमंत्री पद पर श्रीमति इंदिरा गांधी, लोकसभा अध्यक्ष पद पर श्रीमति मीरा कुमार और श्रीमति सुमित्रा महाजन तथा विभिन्न राज्यों के राज्यपाल के रुप में कुशल नेतृत्व प्रदान कर चुकी है और वर्तमान में भी अपना कुशल नेतृत्व प्रदान कर रही हैं।

सारणी - 1 लोक सभा चुनावों में महिला सहभागिता

क. स.	वर्ष	कुल सीट	कुल उम्मीदवार	महिला उम्मीदवार	कुल उम्मीदवारों में महिला उम्मीदवारों का प्रतिशत	विजयी महिलाओं की संख्या	महिला उम्मीदवारों की जीत का प्रतिशत
1	1952	499	1874	51	2.72	24	47
2	1957	500	1519	41	2.69	24	58
3	1962	494	1985	65	3.27	37	56
4	1967	515	2369	66	2.78	33	50
5	1971	518	2784	86	3.08	28	32.55
6	1977	542	2439	71	2.91	21	29.57
7	1980	542	4629	142	3.06	32	22.53
8	1984	508	4241	157	3.70	45	28.66
9	1989	529	6160	198	3.21	28	14.14
10	1991	521	8699	325	3.73	42	12.92
11	1996	545	-	599	-	41	6.84
12	1998	543	-	274	-	44	16.05
13	1999	537	-	295	-	52	17.62
14	2004	543	5435	350	-	52	14.85

15	2009	543	8070	556	6.88	64	11.51
16	2014		–	543	–	68	12.52
17	2019	545	8049	724	–	78	10.77

स्त्रोतः loksabha.nic.in/members/womenar.aspx?isno के आधार पर

राजनीतिक सहभागिता का महत्वपूर्ण चरण चुनावी प्रकिया में सहभागिता होता है। भारत की केन्द्रीय विधायिका अर्थात संसद के लोकप्रिय सदन में महिला सहभागिता की स्थिति उपेक्षित रही है। लोकसभा आम चुनाव-1952 में कुल 1874 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 51 रही। इन 51 महिला प्रत्याशियों में से 24 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1957 में कुल 1519 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 41 रही। इन 41 महिला प्रत्याशियों में से 24 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1962 में कुल 1985 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 65 रही। इन 65 महिला प्रत्याशियों में से 37 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1967 में कुल 2369 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 66 रही। इन 66 महिला प्रत्याशियों में से 33 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1971 में कुल 2784 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 86 रही। इन 86 महिला प्रत्याशियों में से 28 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही।

लोकसभा आम चुनाव-1977 में कुल 2439 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 71 रही। इन 71 महिला प्रत्याशियों में से 21 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1980 में कुल 4629 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 142 रही। इन 142 महिला प्रत्याशियों में से 32 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1984 में कुल 4241 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 157 रही। इन 157 महिला प्रत्याशियों में से 45 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1989 में कुल 6160 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 198 रही। इन 198 महिला प्रत्याशियों में से 28 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1991 में कुल 8699 प्रत्याशियों में महिला प्रत्याशियों की संख्या 325 रही। इन 325 महिला प्रत्याशियों में से 42 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही।

लोकसभा आम चुनाव-1996 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 599 रही। इन 599 महिला प्रत्याशियों में से 41 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1998 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 274 रही। इन 274 महिला प्रत्याशियों में से 44 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-1999 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 295 रही। इन 295 महिला प्रत्याशियों में से 52 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-2004 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 350 रही। इन 350 महिला प्रत्याशियों में से 52 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-2009 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 556 रही। इन 556 महिला प्रत्याशियों में से 64 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-2014 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 543 रही। इन 543 महिला प्रत्याशियों में से 68 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही। लोकसभा आम चुनाव-2019 में महिला प्रत्याशियों की संख्या 724 रही। इन 724 महिला प्रत्याशियों में से 78 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही।[11] लोकसभा चुनावों में महिला उम्मीदवारों की संख्या की द्वष्टि से सर्वाधिक सहभागिता वर्तमान लोकसभा (17वीं लोकसभा) में 724 रही हैं।

सारणी 2 लोकसभा में महिला सांसद

क्र. स.	वर्ष	कुल सीट	महिला सदस्य संख्या	कुल सदस्यों में महिला सदस्यों का प्रतिशत
1	1952	499	24	4.80
2	1957	500	24	4.8

3	1962	503	37	7.35
4	1967	523	33	6.30
5	1971	521	28	5.37
6	1977	544	21	3.86
7	1980	544	32	5.88
8	1984	544	45	8.27
9	1989	517	28	5.41
10	1991	544	42	7.72
11	1996	543	41	7.55
12	1998	543	44	8.10
13	1999	543	52	9.57
14	2004	543	52	9.57
15	2009	545	64	11.74
16	2014	545	68	12.47
17	2019	545	78	14.55
	औसत	**9046**	**713**	**7.88**

स्त्रोतः loksabha.nic.in/members/womenar.aspx?isno के आधार पर

प्रथम लोकसभा से वर्तमान लोकसभा तक में महिला सदस्यों का उच्चतम स्तर 14.55 प्रतिशत वर्तमान लोकसभा (17वीं लोकसभा) में है। भारत की केन्द्रीय विधायिका के लोकप्रिय सदन में महिला सहभागिता की स्थिति उपेक्षित रही है। प्रथम लोकसभा (1952-1957) के कुल सदस्यों 499 में महिला सदस्यों की संख्या 24 (4.80 प्रतिशत) रही। द्वितिय लोकसभा (1957-1962) के कुल सदस्यों 500 में महिला सदस्यों की संख्या 24 (4.80 प्रतिशत) रही। तृतीय लोकसभा (1962-1967) के कुल सदस्यों 503 में महिला सदस्यों की संख्या 37 (7.35 प्रतिशत) रही। चतुर्थ लोकसभा (1967-1971) के कुल सदस्यों 523 में महिला सदस्यों की संख्या 33 (6.30 प्रतिशत) रही। पंचम लोकसभा (1971-1977) के कुल सदस्यों 521 में महिला सदस्यों की संख्या 28 (5.37 प्रतिशत) रही। षष्टम लोकसभा (1977-1980) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 21 (3. 49 प्रतिशत) रही। सप्तम लोकसभा (1980-1984) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 32 (5.88 प्रतिशत) रही। अष्ठम लोकसभा (1984-1989) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 45 (8.27 प्रतिशत) रही। नवम लोकसभा (1989-1991) के कुल सदस्यों 517 में महिला सदस्यों की संख्या 28 (3.49 प्रतिशत) रही। दशम लोकसभा (1991-1996) के कुल सदस्यों 544 में महिला सदस्यों की संख्या 42 (7.72 प्रतिशत) रही। 11वीं लोकसभा (1996-1998) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 41 (7.55 प्रतिशत) रही। 12वीं लोकसभा (1998-1999) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 44 (8.10 प्रतिशत) रही। 13वीं लोकसभा (1999-2004) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 52 (9. 57 प्रतिशत) रही। 14वीं लोकसभा (2004-2009) के कुल सदस्यों 543 में महिला सदस्यों की संख्या 52 (9.57 प्रतिशत) रही। 15वीं लोकसभा (2009-2014) के कुल सदस्यों 545 में महिला सदस्यों की संख्या 64 (11.74 प्रतिशत) रही। 16वीं लोकसभा (2014-2019) के कुल सदस्यों 545 में महिला सदस्यों की संख्या 68 (12.47 प्रतिशत) रही। 17वीं लोकसभा (2019-2024) के कुल सदस्यों 545 में महिला सदस्यों की संख्या 78 (14.31 प्रतिशत) हैं।[12]

राजस्थान में महिला राजनीतिक सहभागिता

राजनीतिक सहभागिता किसी भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था के लिए अनिवार्य शर्त है। सामान्यतः किसी भी राजनीतिक समाज में किसी वर्ग विशेष के राजनीतिक सहभागिता का विश्लेषण राजनीतिक गतिविधियों में उस वर्ग की भागीदारी के अध्ययन के आधार पर

किया जा सकता है। किसी समाज में महिला वर्ग की राजनीतिक सहभागिता का अध्ययन चुनावी गतिविधियों में उनकी भागीदारी के आधार पर किया जाता है।

सारणी - 3 राजस्थान विधानसभा आम चुनावों में महिला उम्मीदवार

क्र. स.	विधानसभा आम चुनाव	कुल उम्मीदवार की संख्या	पुरूष उम्मीदवार की संख्या	महिला उम्मीदवार की संख्या
1	1952	757	753	04
2	1957	653	632	21
3	1962	890	875	15
4	1967	802	783	19
5	1972	875	858	17
6	1977	1146	1115	31
7	1980	1406	1375	31
8	1985	1485	1440	45
9	1990	3088	2995	93
10	1993	2438	2341	97
11	1998	1439	1370	69
12	2003	1514	1423	118
13	2008	2194	2040	154
14	2013	2096	1930	166
15	2018	2294	2015	189
	योग	**23104**	**21945**	**1069**

स्त्रोतः सारणी 11, वुमेन पार्टिसिपेशन इन राजस्थान विधानसभा सिन्स 1952, फॉर्टीन विधानसभा जनरल इलेक्शन 2013, इलेक्शन डिपार्टमेन्ट, राजस्थान, पृ.118 के आधार पर

वर्ष 1952 में पहली विधानसभा के गठन से लेकर आज तक प्रदेश में पन्द्रह विधानसभाओं का गठन हो चुका है। इन विधानसभाओं के लिये समय-समय पर सम्पन्न आम चुनावों में कुल 23104 प्रत्याशी अपना भाग्य आजमा चुके है। जिनमें पुरूष

प्रत्याशियों की संख्या 21945 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 1069 रही। इन समस्त चुनावों में प्रत्याशी के रूप में पुरूषों की सहभागिता महिलाओं की सहभागिता से अधिक रही हैं। जो प्रदेश में महिला सहभागिता की उपेक्षित स्थिति को स्पष्ट करता है।

राजस्थान की पहली विधानसभा (1952-1957) की कुल 160 सीटों के लिए सम्पन्न प्रथम आम चुनाव-1952 में कुल 757 प्रत्याशियों ने सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 753 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 4 रही। चारों ही महिला प्रत्याशियों को प्रथम आम चुनाव में पराजय का मुंह देखना पड़ा। दूसरी विधानसभा (1957-1962) की कुल 176 सीटों के लिए सम्पन्न द्वितिय आम चुनाव-1957 में कुल 653 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 632 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 21 रही। 21 महिला प्रत्याशियों में से 9 महिला प्रत्याशी विजयी रहीं, तीसरी विधानसभा (1962-1967) की कुल 176 सीटों के सम्पन्न तृतीय आम चुनाव-1962 में कुल 890 उम्मीदवारों ने सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 875 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 15 रही। 15 महिला प्रत्याशियों में से आठ महिला प्रत्याशी विजयी रही, चौथी विधानसभा (1967-72) की कुल 184 सीटों के लिए सम्पन्न चतुर्थ आम चुनाव-1967 में कुल 802 उम्मीदवारों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 783 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 19 रही। इन 19 महिला प्रत्याशियों में से 6 महिला प्रत्याशी चुनाव जीतने में सफल रही।

पांचवी विधानसभा (1972-1977) की कुल 184 सीटों के लिए सम्पन्न पंचम आम चुनाव-1972 में 875 उम्मीदवारों ने सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 858 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 17 रही। 17 महिला प्रत्याशियों में से 13 प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता प्राप्त हुई। छठी विधानसभा (1977-1980) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न षष्टम आम चुनाव-1977 में कुल 1146 प्रत्याशियों ने निर्वाचन में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 1115 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 31 रही। छठी विधानसभा चुनाव में कुल 31 महिला प्रत्याशियों में से 8 महिला प्रत्याशियों को निर्वाचन में सफलता प्राप्त हुई। सातवीं विधानसभा (1980-1985) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न सप्तम आम चुनाव-1980 में कुल 1406 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 1375 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 31 रही। 31 महिला प्रत्याशियों में से 10 महिला प्रत्याशियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई। आठवीं विधानसभा (1985-1990) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न अष्टम आम चुनाव-1985 में कुल 1485 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 1440 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 45 रही। 45 महिला प्रत्याशियों में से 15 महिला प्रत्याशी निर्वाचन में सफलता प्राप्त हुई। नवीं विधानसभा (1990-1992) के 200 सीटों के लिए सम्पन्न प्रथम आम चुनाव-1990 में कुल 3,088 प्रत्याशियों ने निर्वाचन में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 2995 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 93 रही। 93 महिला प्रत्याशियों में से 11 महिला प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता प्राप्त हुई। दसवीं विधानसभा (1993-1998) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न दशम आम चुनाव-1993 में कुल 2438 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 2341 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 97 रही। इन 97 महिला प्रत्याशियों में से मात्र 10 महिला प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता प्राप्त हुई।

11वीं विधानसभा (1998-2003) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न 11 वें आम चुनाव-1998 में कुल 1439 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 1370 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 69 रही। 69 महिला प्रत्याशियों में से 14 महिला प्रत्याशियों की चुनाव में सफलता प्राप्त हुई। बारहवीं विधानसभा (2003-2008) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न 12 वें आम चुनाव-2003 में 1541 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 1423 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 118 रही। इन 118 महिला प्रत्याशियों में से मात्र 12 महिला प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता इन 154 महिला प्रत्याशियों में से मात्र 28 महिला प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता मिली। 13वीं विधानसभा (2008-2013) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न 13 वें आम चुनाव-2008 में कुल 2194 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 2040 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 154 रही। इन 154 महिला प्रत्याशियों में से मात्र 28 महिला प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता प्राप्त हुई। 14वीं विधानसभा (2013-2018) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न 14 वें आम चुनाव-2013 में कुल 2096 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 1930 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 166 रही। इन 166 महिला प्रत्याशियों में से मात्र 28 महिला प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता प्राप्त हुई। 15वीं विधानसभा (2018-2023) की 200 सीटों के लिए सम्पन्न 15 वें आम चुनाव-2008 में कुल 2294 प्रत्याशियों ने चुनाव में सहभागिता की, जिसमें पुरूष प्रत्याशियों की संख्या 2015 तथा महिला प्रत्याशियों की संख्या 189 रही। यह प्रदेश विधानसभा के चुनाव इतिहास

का प्रथम अवसर था, जब किसी चुनाव में महिला प्रत्याशियों की सहभागिता लगभग आठ प्रतिशत रही।[13] राजस्थान विधानसभा चुनाव के इतिहास में यह महिला प्रत्याशियों की अधिकतम संख्या रही। इन 189 महिला प्रत्याशियों में से मात्र 25 महिला प्रत्याशियों को चुनाव में सफलता प्राप्त हुई।

सारणी - 4 राजस्थान विधानसभा में महिला सदस्य/ विधायक

क्र. स.	विधानसभा	कुल सदस्य	महिला सदस्य/ विधायक			कुल सदस्यों में महिला सदस्यों का प्रतिशत
			आम चुनाव में निर्वाचित	उप चुनाव में निर्वाचित	कुल निर्वाचित संख्या	
1	1952-1957	160	0	02	02	1.25
2	1957-1962	176	09	-	09	5.11
3	1962-1967	176	08	-	08	4.54
4	1967-1972	184	06	01	07	3.80
5	1972-1977	184	13	-	13	7.06
6	1977-1980	200	08	-	08	4.00
7	1980-1985	200	10	-	10	5.00
8	1985-1990	200	15	02	17	8.50
9	1990-1992	200	11	-	11	5.50
10	1993-1998	200	09	01	10	5.00
11	1998-2003	200	14	01	15	7.50
12	2003-2008	200	12	01	13	6.50
13	2008-2013	200	28	01	29	14.50
14	2013-2018	200	28	01	29	14.50
15	2018-2024	200	25	02	27	13.50
	योग	2880	196	12	208	

स्त्रोतः राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक, परिशिष्ट-ट , विधान बोधनी, राजस्थान विधानसभा, सचिवालय, जयपुर, जुलाई 2003, पृ. 59 के आधार पर

प्रदेश में आज तक 15 विधानसभाओं का गठन हो चुका है। इन 15 विधानसभाओं के कुल 2880 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या मात्र 208 है। आज तक प्रदेश की किसी भी विधानसभा में महिला सदस्यों की अधिकतम संख्या

13वीं विधानसभा में 29 रही तथा न्यूनतम संख्या प्रथम विधानसभा (1952) में 2 रही। प्रथम विधानसभा (1952-1957) में कुल 160 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या मात्र 2 (1.25 प्रतिशत) रही। यद्यपि मुख्य चुनाव (1952) में किसी महिला को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर नही हुआ। उपचुनाव के माध्यम से दो महिला प्रतिनिधियों को विधानसभा की सदस्यता प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। द्वितीय विधानसभा (1957-1962) के कुल 176 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 9 रही, जो कुल सदस्य संख्या की 5.11 प्रतिशत थी। तृतीय विधानसभा (1962-1967) के कुल 176 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 8 रही, जो कुल सदस्य संख्या की 4.54 प्रतिशत थी। चौथी विधानसभा (1967-1972) के कुल 184 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 7 रहीं, जो कुल सदस्य संख्या की 3.80 प्रतिशत रही। चौथी विधानसभा की कुल 07 सदस्यों में से 06 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा 01 महिला सदस्य ने उपचुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। पांचवी विधानसभा (1972-1977) के कुल 184 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 13 रही जो कुल सदस्य संख्या की 7.06 प्रतिशत रही।

छठी विधानसभा (1977-80) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 08 रही जो कुल सदस्य संख्या की 4 प्रतिशत रही। सातवीं विधानसभा (1980-85) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 10 रही जो कुल सदस्य संख्या की 5 प्रतिशत रही। आठवीं विधानसभा (1985-90) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या की संख्या 17 रही जो कुल सदस्य संख्या की 8.50 प्रतिशत रही। आठवी विधानसभा की कुल 17 सदस्यों में से 15 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा 2 महिला सदस्यों ने उपचुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। नौवी विधानसभा (1990-1993) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 11 रही जो कुल सदस्य संख्या की 5.5 प्रतिशत रही। दसवीं विधानसभा (1993-98) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 10 रही जो कुल सदस्य संख्या की 5 प्रतिशत रही। 10 वीं विधानसभा की कुल 10 सदस्यों में से 09 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा 01 महिला सदस्य ने उपचुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। ग्यारहवीं विधानसभा (1998-2003) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 15 रही जो कुल सदस्य संख्या की 7.5 प्रतिशत रही।

ग्यारहवी विधानसभा के कुल 15 महिला सदस्यों में से 14 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा एक महिला सदस्य ने उप चुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। बारहवीं विधानसभा के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 13 रही। जो कुल सदस्य संख्या की 6.5 प्रतिशत रही। बारहवी विधानसभा के कुल 13 महिला सदस्यों में से 12 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा एक महिला सदस्य ने उप चुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। 13वीं विधानसभा (2008-2013) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 29 रही जो कुल सदस्य संख्या की 14.5 प्रतिशत रही। 13 वीं विधानसभा की कुल 29 सदस्यों में से 28 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा 01 महिला सदस्य ने उपचुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। 14वीं विधानसभा (2013-2018) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 29 रही जो कुल सदस्य संख्या की 14.5 प्रतिशत रही। 14 वीं विधानसभा की कुल 29 सदस्यों में से 28 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा 01 महिला सदस्य ने उपचुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। 15वीं विधानसभा (2018-2023) के कुल 200 सदस्यों में महिला सदस्यों की संख्या 27 रही जो कुल सदस्य संख्या की 13.5 प्रतिशत रही। 15 वीं विधानसभा की कुल 27 सदस्यों में से 25 महिला सदस्यों ने मुख्य चुनाव तथा 02 महिला सदस्य ने उपचुनाव के माध्यम से विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की।[14]

इस प्रकार भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की सहभागिता की स्थिति लैंगिक समानता के मानकानुसार अनुकूल नही है। वर्ष 2019 में घोषित जेण्डर डवलपमेन्ट इन्डेक्स 2018 के अनुसार 166 देशों की सूची में भारत को 153 वां स्थान प्राप्त है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उल्लेखनीय स्थान रखने वाले भारत देश के लिए यह स्थिति शोभनीय नही है। यद्यपि पूर्व वर्षों की अपेक्षा वर्तमान में भारतीय समाज-राजनीति में सुधार द्वष्टिगत होता है। केन्द्रिय राजनीति में ही नही प्रदेश राजनीति में भी विधानसभा सदस्य के रूप में महिलाएं अपने कुशल राजनैतिक नेतृत्व क्षमता का परिचय दे रही है। पंचायती राज सम्बंधी 73वें संविधान संशोधन ने महिला नेतृत्व के विस्तार एवं संवर्धन में सराहनीय भूमिका का निर्वहन किया है। प्रदेश राजनीति में महिला नेतृत्व का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यद्यपि संख्यात्मक दृष्टि से राजस्थान में महिला नेतृत्व की स्थिति शोचनीय रही है, लेकिन अपनी कुशल नेतृत्व क्षमता के आधार पर महिलाऐं प्रदेश राजनीति के इतिहास में नित-नवीन किर्तिमान स्थापित कर रही हैं।

सन्दर्भ सूची

1. शैलेन्द्र मौर्य, तेरहवीं राजस्थान विधानसभा आम चुनाव-2008 में महिला सहभागिता, लोकतंत्र समीक्षा, खण्ड-43, अंक-1-2, जनवरी - जून 2011, पृ. 59
2. राजस्थान का भारत dsguruji.com
3. मानव विकास सूची hi.m.wikipedia.org
4. file:///G/Furnt Fild Women Governer/Women's political participation in india-wikipedia.html
5. संजीव महाजन, सामाजिक मनोविज्ञान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2004, पृ.469-470
6. कुसुम कुशवाहा, राजनैतिक सहभागिता- महिला सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम, योजना, वर्ष 47, अंक12, मार्च 2004, योजना भवन, नई दिल्ली, पृ. 17
7. कुसुम कुशवाहा, नोट-5, पृ. 17-18
8. 17वीं लोकसभा में महिला सदस्यों की संख्या 78 है तथा 15वीं राजस्थान विधानसभा में महिला सदस्यों की संख्या 25 है।
9. naidunia.com/specialstory-womens-representation-in-parliament
10. navbharattimes.indiatimes.com/elections/lo-sabha-elections/news/record-78-women-mp-in-new-lok-saha/articles
11. loksabha.nic.in/members/womenar.aspx?isno के आधार पर
12. loksabha.nic.in/members/womenar.aspx?isno के आधार पर
13. सारणी सारणी 11, वुमेन पार्टिसिपेशन इन राजस्थान विधानसभा सिन्स 1952, फॉर्टीन विधानसभा जनरल इलेक्शन 2013, इलेक्शन डिपार्टमेन्ट, राजस्थान, पृ.118 एवं राजस्थान विधानसभा की महिला विधायक परिशिष्ट-1, विधान बोधनी, राजस्थान विधानसभा, सचिवालय, जयपुर, जुलाई 2003, पृ. 59 के आधार पर
14. परिशिष्ट-1, राजस्थान विधानसभा में महिला सदस्यों की संख्या, शैलेन्द्र मौर्य, महिला राजनैतिक नेतृत्व एवं महिता विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2011, पृ. 273